पत्र सूचना शाखा

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ०प्र०

(राज्यपाल सूचना परिसर)

राज्यपाल की अध्यक्षता में डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या का स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह हुआ सम्पन्न

अहिल्याबाई होल्कर की जयंती वर्षभर मनाने का विश्वविद्यालय को दिया निर्देश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक पहचान दिलाना तथा विद्यार्थियों को विश्व स्तरीय प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना है

जब तक सद्भावना हमारे भीतर विकसित नहीं होगी, तब तक समाज में वास्तविक परिवर्तन सम्भव नहीं

शिक्षा के साथ-साथ खेल भी विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक

जो खेलेगा, वही खिलेगा की भावना को आत्मसात करना आवश्यक

प्रदेश के विश्वविद्यालय राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं

सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए बच्चियों का टीकाकरण आवश्यक

राज्यपाल, श्रीमती आनंदीबेन पटेल

लखनऊ: 04 मार्च, 2025

प्रदेश की राज्यपाल एवं राज्य विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में आज डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या का स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल जी ने नवनिर्मित सरदार पटेल भवन का लोकार्पण तथा स्वर्ण जयंती पुस्तक का विमोचन किया। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ लोगो डिजाइनर पुरस्कार, वर्ष 2024 का शोध पुरस्कार, तथा सर्वश्रेष्ठ स्नातक एवं परास्नातक छात्र पुरस्कार प्रदान किए। इसके अलावा, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रतियोगिताओं में उनकी उपलब्धियों के आधार पर पुरस्कार दिए गए। राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गाँवों के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में उनकी श्रेष्ठता के आधार पर सम्मानित किया। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ आंगनबाड़ी बालक, बालिका एवं माँ, पांच चयनित आंगनबाड़ियों की कार्यत्रियों को सर्वश्रेष्ठ आंगनबाड़ी पुरस्कार भी वितरित किया। इसी क्रम में ग्राम सभा के समग्र विकास में योगदान देने वाले ग्राम प्रधानों को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय की अब तक की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए, शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में निरंतर प्रगति के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि एक सभ्य समाज में विश्वविद्यालयों को मानव निर्माण के एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में जाना जाता है, जो सभ्यता का निर्माण करने वाली सम्पूर्ण बौद्धिक पूंजी के विकास एवं संरक्षण में निरत रहते हैं।

विश्वविद्यालयों का सम्बन्ध केवल बौद्धिक सम्पदा को अक्षुण्ण रखने से नहीं है, अपितु जो खो गया है, उसे निरंतर पुनः प्राप्त करना, जो उपेक्षित हो गया है, उसे पुनः स्थापित करना, जो दूषित हो गया है, उसे पुनः संगृहीत कर मूल्य रूप में विद्यमान करना, विमर्शों पर पुनर्विचार कर उन्हें सकारात्मक दिशा प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि समाज को समय काल एवं परिस्थिति के अनुरूप पुनर्गठित करना है और श्रेष्ठ बनाना है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के दृष्टिगत शिक्षकों तथा शिक्षण पद्धतियों में गुणवत्ता और नवीनता का समावेश होना चाहिए, जिसमें वैश्विक स्तर पर शिक्षक अपनी भूमिका को पूर्ण परिभाषित कर चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बन सकेें तथा गुणवत्ता परक शोध, अध्ययन एवं अध्यापन पर अपना ध्यान केन्द्रित कर समर्थ मानव के निर्माण के लक्ष्य की दिशा में अग्रसर हो सकंे।

इस अवसर पर राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय को 50 वर्ष पूर्ण होने की बधाई दी और कहा कि यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने विश्वविद्यालय के शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि वे पिछले 50 वर्षों की उपलब्धियों पर विचार करें और आगे की योजना बनाएं। राज्यपाल जी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की चर्चा करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक पहचान दिलाना

और विद्यार्थियों को विश्व स्तरीय प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना है। उन्होंने शिक्षकों एवं विश्वविद्यालय प्रशासन को निर्देश दिया कि वे योजना बनाकर विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने की रणनीति तैयार करें।

राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय में 'अवधी चित्रकला में राम' थीम पर आधारित प्रदर्शनी की प्रशंसा करते हुऐ कहा कि जब तक सद्भावना हमारे भीतर विकसित नहीं होगी, तब तक समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं है। उन्होंने विश्वविद्यालय को निर्देश दिया कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के आदर्शों पर डिबेट आयोजित की जाए तथा शबरी ने प्रभु श्रीराम को जूठा फल क्यों खिलाया और श्रीराम ने उसे क्यों खाया जैसे विषयों पर शोध कराया जाए। इसका लाभ विद्यार्थियों को मिलेगा तथा उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आयेगा।

राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय द्वारा लगाई गई मिलेट्स व्यंजन प्रदर्शनी पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए निर्देश दिया कि छात्रों को मिलेट्स (श्रीअन्न) आधारित व्यंजन बनाना सिखाया जाए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होंने विश्वविद्यालय को आत्मनिर्भर बनने के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने झांसी विश्वविद्यालय का उदाहरण देते हुए बताया कि वहाँ के विद्यार्थी इस दिशा में आत्मनिर्भर हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने 'श्रीअन्न' को वैश्विक पहचान दिलाई है और इसकी मांग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ रही है। उन्होंने कुपोषित बच्चों को मिलेट्स से जोड़ने का निर्देश दिया तथा विश्वविद्यालय को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि सभी छात्राओं का हीमोग्लोबिन टेस्ट किया जाए। राज्यपाल जी ने यह भी निर्देश दिया कि छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों को सप्ताह में

एक दिन स्वयं भोजन पकाने के लिए प्रेरित किया जाए। राज्यपाल जी ने खेलों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि आठ वर्ष की आयु तक बच्चे अधिकतम चीजें सीख सकते हैं, इसलिए इस उम्र में उन्हें न केवल पढ़ाई बल्कि खेलों में भी संलग्न होना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय को निर्देश दिया कि विद्यार्थियों के लिए ऐसी पुस्तकें खरीदी जाएं, जिनमें उनके शारीरिक विकास के अनुसार उचित पोषण और व्यायाम की जानकारी हो।

राज्यपाल जी ने इस बात पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री जी खेलों को बढ़ावा दे रहे हैं। 'जो खेलेगा, वही खिलेगा' की भावना को आत्मसात करना आवश्यक है। उन्होंने अभिभावकों से कहा कि वे अपने बच्चों को खेलने के लिए प्रेरित करें और उनके शारीरिक व मानसिक विकास में खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को खेलों के मैदान में उतरने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे न केवल उनकी शारीरिक फिटनेस बनी रहती है, बल्कि उनके आत्मविश्वास और टीम भावना का भी विकास होता है। खेलों से एक-दूसरे के प्रति सहयोग और समझ बढ़ती है, जो भविष्य में उनके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती है।

उन्होंने विश्वविद्यालय को अहिल्याबाई होल्कर जी की जयंती वर्षभर मनाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि अहिल्याबाई होल्कर जी ने ही सबसे पहले पेंशन योजना की शुरुआत की थी और उनका जीवन समाज के लिए प्रेरणादायक है।

राज्यपाल जी ने कहा कि विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलनी चाहिए और इसके लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा।

उन्होंने विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से नैक मूल्यांकन में भाग लेने का निर्देश दिया, जिससे उनकी कमियां और खूबियां उजागर हो सकें। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालय अब न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पहचान बना रहे हैं। राज्यपाल जी ने कहा कि विश्वविद्यालयों को वर्ल्ड रैंकिंग प्राप्त करने के लिए प्रयास करने चाहिए। उन्होंने बताया इसके लिए एक विशाल सेमिनार आयोजित किया जाएगा। सभी विश्वविद्यालय इसमें प्रतिभाग करें, सीखें और आगे बढ़ें।

राज्यपाल जी ने शिक्षकों से अपने कर्तव्यों को न भूलने की अपील की और कहा कि उन्हें प्रधानमंत्री जी के कार्य करने की शैली से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों के समर्पण की भी सराहना की। उन्होंने गुजरात का अनुभव साझाा करते हुए कहा कि वहां हर बुधवार को पूरी कैबिनेट बैठक कर राज्य की समस्याओं का समाधान निकालती थी। इसी तर्ज पर उन्होंने विश्वविद्यालयों को नियमित बैठकें करने और अपने विभागों की समस्याओं पर चर्चा करने का निर्देश दिया। राज्यपाल जी ने नालंदा विश्वविद्यालय का उदाहरण देते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों को नवाचार और अन्य विश्वविद्यालयों से सीखने की प्रवृत्ति अपनानी चाहिए।
उन्होंने तेजी से बढ़ते सर्वाइकल कैंसर पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे बचाव के लिए टीकाकरण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर विश्वविद्यालय को संकल्प लेने का निर्देश दिया कि वे स्वच्छता तथा छात्राओं को सर्वाइकल कैंसर के टीकाकरण के लिए जागरूक करेंगे।

राज्यपाल जी ने अंत में विश्वविद्यालय को इसके स्वर्ण जयंती वर्ष की शुभकामनाएं दीं और सभी छात्रों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों से

शिक्षा, शोध और नवाचार के क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

राज्य मंत्री उच्च शिक्षा, श्रीमती रजनी तिवारी ने अपने संबोधन में विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष की सराहना करते हुए कहा कि यह 50 वर्षों की शैक्षणिक यात्रा, शोध एवं नवाचार का महत्वपूर्ण अवसर है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बीते 50 वर्षों में संस्थान ने शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय नई शिक्षा नीति के अनुरूप विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन कर रहा है और विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर श्रीरामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव श्री चंपत राय, आयुक्त गौरव दयाल, जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह, एस0एस0पी0 राज करन नय्यर, जनप्रतिनिधिगण, सम्बद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य, अन्य अधिकारी/शिक्षक/कर्मचारीगण, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियाँ व स्कूली बच्चे उपस्थित रहे।

संपर्क सूत्र:
डॉ0 संगीता चौधरी,
सूचना अधिकारी, राजभवन
मो0: 9161668080

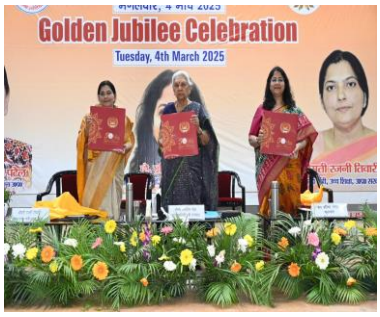

Golden Jubilee Celebration
Tuesday, 4th March 2025

स्वर्ण जयंती समारोह
Golden Jubilee Celebration

स्वर्ण जयंती समारोह
Golden Jubilee Celebration

स्वर्ण जयंती समारोह
Golden Jubilee Celebration